Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पर्यावरण संरक्षण में व्यवसाय की भूमिका

प्रवीण कुमार सोनी *

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) शासकीय महाविद्यालय, माकड़ोन, जिला उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में व्यावसायिक संगठनों के लिए अनेकों सामाजिक उत्तरदायित्व तय किये गये हैं जिन्हें पूर्ण करना उनके लिये नैतिक/कानूनी रूप से अनिवार्य होता है। इन्ही सामाजिक दायित्वों की कड़ी में पर्यावरण के प्रति भी उत्त्रदायित्व निर्धारित किये गए हैं। ग्लोबल वार्मिंग के चलते यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक व्यावसायिक संगठन अपनी व्यावसायिक रणनीति तैयार करने के पूर्व पर्यावरणीय मुद्दों पर गंभीरता से विचार करे। मेरे द्वारा प्रस्तुत इस पेपर का मुख्य उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि व्यावसायिक संगठनों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्वों को पूर्ण करते हुए भी प्रतिस्पर्धात्मक लाभ कमाया जा सकता है। व्यावसायिक संगठनों का पुनर्गठन कर उन्हे पर्यावरण के अनुकूल बनाने से संगठनों को अपने उत्पाद की लागत कम करने और मुनाफा अधिकतम करने में मदद मिलती है।

व्यवसायिक संगठन पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अपने संगठन में हरित परिवर्तन कर उत्पादन प्रक्रिया में अपशिष्ट की मात्रा को कम करके उत्पादन लागत को कम सकते है। इसके अतिरिक्त हरित परिवर्तन को अपनाने से उत्पादन प्रक्रिया और उत्पाद डिजाईन के परिवर्तित नवीन स्वरूप के आधार पर अन्य प्रतियोगी संगठनों से स्वयं को अलग प्रस्तुत करने में सहायता मिलती है। अंतत: पर्यावरण के अनुकूल रणनीति पर ध्यान केन्द्रित कर कोई भी व्यावसायिक संगठन अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता है।

शब्द कुंजी – पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण, हरित परिवर्तन, रणनीति, उत्पाद, लागत, लाभ।

प्रस्तावना – पर्यावरण एक ऐसा विषय है जो सम्पूर्ण विश्व के साथ जुड़ा है। मानव और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं। मानव और पर्यावरण के मध्य क्षण–प्रतिक्षण आदान प्रदान चलता रहता है। मानव जब पर्यावरण संरक्षण के लिये प्रयास करता है तो उसके प्रतिफल में पर्यावरण मनुष्य को स्वस्थ जीवन व उच्च जीवन स्तर प्रदान करता है। सम्पूर्ण मानव जीवन पर्यावरण पर ही निर्भर है, फिर चाहे वह पेड़ पौधे हों, जिनसे हम ऑक्सीजन प्राप्त करते है या नदियाँ हों, जिनसे हम जल प्राप्त करते हैं या भूमि हो जहां हम निवास करते हैं। पर्यावरण ने मानव को अनंतकाल से नि:शुल्क संसाधन प्रदान किये हैं जिनका मनुष्य ने भरपूर उपयोग किया है। आधुनिकीकरण के इस दौर में कहीं न कहीं हम मानव और पर्यावरण के मध्य के तालमेल को खत्म करते जा रहे हैं जिसका असर हमें लोगों के बिगड़ते स्वास्थ्य पर दिखाई भी दे रहा है।

पर्यावरण की सुरक्षा का प्रत्यक्ष संबंध प्रदूषण नियंत्रण से है। प्रदूषण मानव जीवन के लिए हानिकारक है। यह मानव के जीवन स्तर को गिराता है तथा हमारी सांस्कृतिक विरासतों को भी हानि पहुंचाता है। प्रदूषण कई प्रकार का होता है जिनके भिन्न–भिन्न कारण होते हैं जैसे – जल प्रदूषण मुख्यत: रासायनिक व औद्योगिक अपशिष्ट तथा कूड़े कचरे को नदियों मे प्रवाहित करने से होता है। भूमि प्रदूषण दुर्गंधमय क्षय तथा भारी प्रदूषित सामग्री एकत्रित होने से होता है। वायु प्रदूषण बढ़ती आबादी, कारखानों व वाहनों से निकलने वाला धुंआ, संचार साधनों का अधिकाधिक प्रयोग आदि के कारण होता है। मनुष्य को सदैव पर्यावरण के प्रति जागरूक रहकर पर्यावरण संरक्षण का प्रयास करना चाहिये। हमारी संस्कृति भी हमें पर्यावरण संरक्षण के संदेश प्रदान करती है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में नदियों, पेड़–पौधों व पर्वतों को पूजनीय माना गया है और उन्हें नुकसान पहुंचाना पाप माना जाता है। वृक्षों के महत्व पर संस्कृत में एक श्लोक है –

अहो एषां वरं जन्म सर्वप्राण्युपजीवनम्।
सुजनस्यैव येषां वै विमुखा यान्ति नार्थिन:।।

अर्थ – इनका जन्म बहुत अच्छा है क्योंकि इन्हीं के कारण सभी प्राणी जीवित हैं। जिस प्रकार किसी सज्जन से कोई याचक खाली हाथ नहीं जाते उसी प्रकार इन वृक्षों के पास से भी कोई खाली हाथ नहीं जाता।

प्राकृतिक पर्यावरण के विशाल महत्व को समझते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग को इन प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में अपने दायित्व को पूर्ण करने का प्रयास करना चाहिये।

व्यावसायिक संगठन और पर्यावरण प्रदूषण – प्रदूषण चाहे किसी भी प्रकार का हो, उसका एक बड़ा कारण व्यावसायिक संगठन व उद्योग–धंधे हैं।

यह सर्वविदित है कि विभिन्न व्यावसायिक संगठनों की औद्योगिक गतिविधियों के कारण शुद्ध वातावरण का लगातार ह्रास हो रहा है। देश के विभिन्न महानगरों जैसे दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, जयपुर, कानपुर आदि में औद्योगिक प्रदूषण आम दृश्य है। इन महानगरों में कारखानों से निकले उत्सर्जन मनुष्य के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाल रहे हैं। यद्यपि कुछ अवशेषों का उपयोग कच्चे माल तथा उर्जा के रूप में अपरिहार्य है किंतु उत्पादकों के लिए इनके प्रयोग से होने वाले कुप्रभावों को कम करना एक बड़ी समस्या है।

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यवसायी अपने उत्पाद/वस्तु को उपभोक्ता के समक्ष अधिक से अधिक आकर्षक स्वरूप में प्रस्तुत करने में लगा हुआ है। आकर्षक पैकिंग के लिये इस्तेमाल किये जाने वाले डिब्बे, पॉलिथीन,

प्लास्टिक आदि वास्तव में पर्यावरण के लिये अत्यंत हानिकारक है । उपभोक्तावाद संस्कृति में युज एण्ड थ्रो का तेजी से पनपना पर्यावरण सन्तुलन के लिये एक चेतावनी है । भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश है इतने बड़े देश में इस कचरे का निस्तारण एक गंभीर समस्या के रूप में हमारे सामने है। इसके निस्तारण के लिये लाखों–करोड़ों रूपये ठ करना होता है ।

पर्यावरण संरक्षण हेतु व्यावसायिक संगठनों द्वारा उठाये जाने वाले कदम – पर्यावरण का स्वरूप हम सभी के लिए महत्वपूर्ण है। अत: इसको नष्ट होने से बचाने का उत्तरदायित्व हम सभी का है। चाहे वह स्वयं सरकार हो, व्यावसायिक उद्यम हो, उपभोक्ता हो, कर्मचारी हो या समाज के अन्य सभी वर्ग। हम सभी को इसे प्रदूषित होने से बचाने के लिये कुछ न कुछ प्रयास अवश्य करना चाहिए। प्रदूषण वाहक उत्पादों पर रोक लगाने के लिए सरकार नए कानून बना सकती है। उपभोक्ता वर्ग ऐसे उत्पादों के उपभोग को कम कर सकते हैं जो पर्यावरण के लिए घातक है ।

व्यावसायिक संगठनों के लिये पर्यावरण संरक्षण एक जटिल विषय है, व्यावसायिक प्रबंधकों द्वारा इस हेतु गंभीरता से विचार किया जाना आवश्यक है। पर्यावरण संबंधी समस्याओं को सुलझाने के लिए व्यावसायिक इकाईयों को स्वयं आगे आना चाहिए । व्यावसायिक संस्थाऐं धन की सृजनकर्ता, रोजगारदाता तथा भौतिक एवं मानवीय संसाधनों को संभालने वाली संस्थाऐं हैं। ये संस्थाऐं यह भी समझती हैं कि प्रदूषण नियंत्रण से संबंधित समस्याओं को सुलझाया जा सकता है।

व्यावसायिक संगठनों द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु निम्न तरीके अपनाये जा सकते हैं –

1. **उत्पादन प्रक्रिया में परिवर्तन –** प्रत्येक व्यावसायिक संगठन परम्परागत उत्पादन प्रक्रिया के स्थान पर पर्यावरणीय अनुकल हरित रणनीति को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान प्रदान कर सकता है।

2. **संयंत्रों के स्वरूप में परिवर्तन करना –** वर्तमान आधुनिक तकनीकी युग में उन्नत तकनीकी वाली मशीनों का प्रयोग करके उत्पादन में लगने वाली ऊर्जा/शक्ति की भी बचत की जा सकती है, साथ ही उत्पादन प्रक्रिया में होने वाले क्षय/अपशिष्ट को भी कम किया जा सकता है ।

3. **उच्च कोटि के कच्चे माल का प्रयोग करना–** उत्पादन हेतु घटिया किस्म के कच्चे माल का प्रयोग करने से प्राकृतिक व सामाजिक पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है । अत: घटिया किस्म के माल के स्थान पर उच्च गुणवत्ता वाले कच्चे माल का प्रयोग किया जा सकता है ।

4. **अपशिष्ट के निष्पादन के लिये वैज्ञानिक तकनीक को प्रयोग करना –** कारखानों से निकलने वाले विभिन्न ठोस अपशिष्ट का निस्तारण करने हेतु वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग किया जा सकता है ।

5. **हरित पैंकिंग सामग्री का प्रयोग करना –** पर्यावरण की शुद्धता की दुष्टि से उत्पाद पैकिंग के लिये पुन: प्रयोग में आने वाली कपड़े की थैलियां, कागज की थैलियां, पेड़ों के पत्तों व मिट्टी के कुल्हड आदि का प्रयोग करना चाहिये । इससे कचरा निस्तारण में होने वाले व्यय की भी बचत होगी और उत्पाद लागत कम होगा और लाभ में वृद्धि होगी ।

6. उच्च स्तरीय प्रबंधकों द्वारा पर्यावरण संरक्षण तथा प्रदूषण नियंत्रण के लिए वचनबद्ध होकर कार्य करना ।

7. इस बात का विश्वास दिलाना कि उद्यम की प्रत्येक इकाई पर्यावरण सुरक्षा तथा प्रदूषण नियंत्रण के लिये वचनबद्ध हैं ।

8. पर्यावरण संरक्षण हेतु सरकार द्वारा चलाये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में सहयोग करना। जैसे प्रदूषित नदियों की सफाई, वृक्षारोपण आदि ।

9. संगठन में प्रदूषण नियंत्रण कार्यक्रम लागू करना ओर समय – समय पर प्रदूषण नियंत्रण कार्यक्रम की लागत एवं प्रतिफल का मूल्यांकन करना ताकि पर्यावरण सुरक्षा हेतु सतत कार्यवाही की जा सके ।

10. प्रदूषण नियंत्रण कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन हेतु आपूतिकर्ता, डीलर्स तथा विक्रेताओं के तकनीकी ज्ञान तथा अनुभवों का लाभ प्राप्त करने हेतु समय समय पर कार्यशालाओं का आयोजन करना ।

11. पर्यावरण संरक्षण के लिये सरकार द्वारा बनाये गए विभिन्न नियमों व अधिनियमों का पालन करना।

वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण एवं सुरक्षा के संबंध में पूरे विश्व में जागरूकता का अनुभव किया जा रहा है । वैश्वीकरण और उदारीकरण, औद्योगीकरण और तेजी से प्रयोग हो रही नई नई तकनीकों के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में प्यावरण प्रदूषण विश्व के सभी देशों के लिये एक गंभीर समस्या बन चुकी है । इसी कारण से पर्यावरण संरक्षण के लिये विश्व भर में अनेकों आंदोलन व कार्यक्रम व कानून प्रचलित है। इन सभी कानूनों का एकमात्र लक्ष्य मानव जाति को गुणवत्तापूर्ण पर्यावरण उपलब्ध कराना है । भारत में भी पर्यावरण संरक्षण हेतु विभिन्न कानून बनाये गये हैं । व्यावसायिक संगठनों द्वारा इन कानूनों का पालन करके पर्यावरण संरक्षण में सहयोग किया जा सकता है ।

भारत में प्रचलित विभिन्न कानून

अ. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 – स्टॉकहोम में 1972 में हुए पर्यावरण सम्मेलन में किए गए निश्चय को अमल में लाते हुए भारत में वर्ष 1986 में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 पारित किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण का संरक्षण और सुधार है ।

ब. वायु प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण अधिनियम 1981 – यह अधिनियम वायु प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण के उद्देश्य से 1981 में पारित किया गया । इस अधिनियम के अनुसार कोई भी व्यक्ति राज्य बोर्ड की पूर्व सहमति के बिना किसी भी वायु प्रदूषण नियंत्रित क्षेत्र में किसी भी औद्योगिक संयंत्र की न तो स्थापना करेगा और न चलाएगा ।

स. जल प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण अधिनियम 1974 – यह अधिनियम जल प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण के उद्देश्य से 1974 में पारित किया गया । इसके अनुसार सभी उद्योगों को अपने कारखानों से निकलने वाले दूषित जल को उचित प्रबंधन करना अनिवाय है।

द. वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 – यह अधिनियम वन्य प्राणियों, पक्षियों और पादपों के संरक्षण से संबंधित विषयों का उपबन्ध करने के उद्देश्य से 1972 में पारित किया गया ।

ई. वन संरक्षण अधिनियम 1980 – भारत में तेजी से घटते वन क्षेत्र के संरक्षण के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा 1980 में यह कानून बनाया गया। इसे लागू करने का मुख्य उद्देश्य वन भूमि को अवांछित रूप से अवन क्षेत्र में परिवर्तन से रोकना था।

पर्यावरण संरक्षण में व्यापार नियमों की भूमिका – पर्यावरण संरक्षण में व्यापार नियमों की भी भूमिका रही है। व्यापार नियमों के द्वारा पर्यावरण को सुरक्षित रखने में अब तक अनेकों प्रयास किए गये हैं–

विश्व व्यापार संगठन –व्यापार उदारीकरण और पर्यावरण संरक्षण के बीच संबंधों को काफी पहले ही मान्यता दी जा चुकी है । मराकश समझौते,

जिसके तहत विश्व व्यापार संगठन की स्थापना की गई थी, की प्रस्तावना में सरकारों द्वारा इसे स्पष्ट रूप से मान्यता दी गई है कि व्यापार को सतत विकास तथा पर्यावरण की रक्षा और संरक्षण के प्रयासों के अनुरूप होना चाहिये।

पर्यावरण लक्ष्यों की प्राप्ति को सुविधाजनक बनाने में वैश्विक नीति निर्माताओं की रूचि जाग्रत हो रही है।

विश्व व्यापार संगठन के चुनिंदा सदस्य व्यापार और प्लास्टिक अपशिष्टों में कमी लाने हेतु वार्ताएं शुरू करने पर विचार कर रहे हैं।

मुक्त व्यापार समझोतों (FTA) की भूमिका – कई क्षेत्रीय और द्विपक्षीय एफ टी ए पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं । ये समझौते अवैध वन्य जीवों की तस्करी, पर्यावरण कानूनों के प्रवर्तन, पर्यावरणीय वस्तुओं के व्यापार के लिये गैर प्रशुल्क बाधाओं तथा वायु की गुणवत्ता में सुधार एवं समुद्री अपशिष्टों को कम करने जैसे मुद्दों की एक विस्तृत श्रंखला से संबंधित है।

पर्यावरण संरक्षण और कॉर्पोरेट की सामाजिक जिम्मेदारी – कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) जैसे कार्यक्रमों में कॉर्पोरेट निवेश, व्यवसाय क्षेत्र में एक प्रगतिशील तरीका बन गया है जिससे कंपनी की पर्यावरण और व्यावसायिक गतिविधियों को समाज की व्यापक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संरक्षित करने की अनुमति मिलती है । अपने ब्रांड मूल्य को मजबूत करने, उचित लागत पर उत्पाद और सेवाऐं प्रदान करने और कर्मचारियों से संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने का आग्रह करने के लिए, व्यवसायों को पर्यावरण के बारे में सामाजिक चिंताओं को अपने रणनीतिक प्रबंध में शामिल करना पड़ा।

बदलते परिवेश के परिणामस्वरूप उद्योग सामाजिक रूप से जागरूक हो गए हैं और समाज और पर्यावरण को बेहतर बनाने की मांग कर रहे हैं। सी एस आर एक बेहतरीन नीति है जिसे बड़े और छोटे संगठन लागू कर सकते हैं क्योंकि इससे सभी को लाभ होता है। आर्थिक स्थिरता और सतत विकास के लिए की दृष्टि से सी एस आर अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

पर्यावरण संरक्षण एवं प्रतिस्पर्धात्मक लाभ – व्यावसायिक संगठनों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्वों को पूर्ण करते हुए भी प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ अर्जित किया जा सकता है। किसी भी संगठन में पर्यावरण संरक्षण हेतु यदि उपर दर्शित कदम उठाये जाते हैं तो उस पर होने वाले व्यय की तुलना में उस संगठन को होने वाले आर्थिक लाभ अधिक होते हैं और उनके लाभ पर सकारात्मक प्रभाव होता है । यह निम्न बिंदुओं से स्पष्ट होता है –

1. व्यावसायिक संगठनों का पुनर्गठन कर उन्हें पर्यावरण के अनुकूल बनाने से संगठनों को अपने उत्पादन की लागत न्यूनतम करने में सफलता मिलती है। उत्पादन लागत न्यूनतम होने से मुनाफा अधिकतम करने में सहायता मिलती है।
2. व्यावसायिक संगठन पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अपने संगठन में हरित परिवर्तन कर उत्पादन प्रक्रिया में होने वाले अपशिष्ट की मात्रा को कम कर सकते हैं जिससे सम्पूर्ण उत्पादन लागत को कम करके लाभ अधिकतम किया जा सकता है।
3. इसके अतिरिक्त हरित रणनीति को अपनाने से उत्पादन प्रक्रिया और उत्पाद डिजाईन के परिवर्तित नवीन स्परूप के आधार पर अन्य प्रतियोगी संगठनों से स्वयं को अलग प्रस्तुत करने में सहायता मिलती है । जिससे आपके व्यावसायिक क्षेत्र में आपकी एक अलग पहचान निर्मित होती है।

निष्कर्ष – पर्यावरण संरक्षण में व्यवसायिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका है, व्यावसायिक संगठनों द्वारा पर्यावरण संरक्षण की विभिन्न गतिविधियों को क्रियान्वित करने तथा पर्यावरण के अनुकूल उत्पादन प्रक्रिया व हरित रणनीति को अपनाने से उनके संगठन द्वारा कमाये जाने वाले लाभ पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। अतत: यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों को जारी रखते हुए भी प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ कमाया जा सकता है और अपने व्यापार के आर्थिक लक्ष्यों को भी पूर्ण किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. पर्यावरण अध्ययन,यशराज प्रकाशन, डॉ. अनीस सिद्धकी, डॉ. राजीव शर्मा, पंकज शर्मा।
2. पर्यावरणीय अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
3. पर्यावरणीय अध्ययन, रमेश बुक डिपो, डॉ. मिलिन्द कोठारी।
4. जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण पर प्रभाव – डॉ. राजेश त्रिपाठी।

****